International Journal of Applied Research 2018; 4(3): 512-514

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(3): 512-514
www.allresearchjournal.com
Received: 26-01-2018
Accepted: 27-02-2018

शशि प्रभा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय
हिन्दी–विभाग, ल.ना.मिथिला
विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर,
दरभंगा, भारत

Corresponding Author:
शशि प्रभा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय
हिन्दी–विभाग, ल.ना.मिथिला
विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर,
दरभंगा, भारत

प्रेमचंद की कहानियों में चारित्रिक वैविध्य

शशि प्रभा

सारांश
प्रेमचंद ने अपने कहानियों में भारतीय समाज का संपूर्ण यथार्थ व्यंजित किया है। इसी संपूर्णता की साधना के लिए उन्होंने अपने पात्रों में चारित्रिक विविधता का ध्यान रखा है। स्त्री–पुरुष, बालक, बालिका, अमीर–गरीब, किसान–मजूदर, सवर्ण, दलित सभी उनकी कहानियों के पात्र बने हैं। कहानियों में पात्रों की संख्या सीमित रखी जाती है। इसका ख्याल रखते हुए भी उन्होंने चरित्र के विकास में कोई कमी नहीं रखा है। प्रेमचंद की कहानियों के पात्र मानवीय संवेदना से परिपूर्ण, समाज की चेतना को कुरदने वाला है। उनकी कहानियों में जिस तरह की कथावस्तु निर्मित होती है, उसी तरह के पात्रों की भी योजना की जाती है। यही प्रेमचंद की विशिष्टता और अमरता का आधार है।

प्रस्तावना
कहानियों में आमतौर पर विविध चरित्रों की गुंजाइश कम होती है, मगर चरित्र के विविध आयामों की भरपूर गुंजाइश रहती है। प्रेमचन्द जितने सशक्त उपन्यासकार थे, उससे कमजोर कथाकार भी नहीं थे। उनके चरित्र–चित्रण के विविध आयामों की बानगी वैसे तो लगभग तमाम कहानियों में मौजूद हैं। मगर हम अपनी सीमा में कतिपय चर्चित कहानियों पर ही विचार करेंगे।
प्रेमचन्द की लगभग पचास कहानियाँ ऐसी हैं जो हिन्दी में अपना अमर स्थान बना चुकी है। ''जब हम हिन्दुस्तान की दूसरी भाषाओं की तरफ नजर डालते हैं, तब हम उन्हें अच्छे से अच्छे कहानीकारों की पाँति में बैठने का हकदार पाते हैं और ब्रिटेन और अमेरिका के अच्छे से अच्छे कहानीकारों से किन्हीं बातों में आगे बढ़ा हुआ भी पाते हैं।'' [1]
प्रेमचन्द की कहानियों में घटनाओं से ज्यादा चरित्र–चित्रण की बारीकियों का महत्त्व है। ईदगाह का बच्चा हामिद आम बच्चों से बिल्कुल अलग किस्म का है। हालांकि खिलौनों और मिठाइयों के प्रति उसमें भी स्वाभाविक ललक है। मगर उसकी विशिष्टता यह है कि जहाँ उसके साथ के सारे बच्चे खिलौनों और मिठाइयों में पैसे व्यय करते हैं। वहीं वह अपनी बूढ़ी दादी के लिए लोहे का चिमटा खरीद कर न केवल खुश है, बल्कि संतुष्ट भी है कि अब रोटी सेंकते हुए उसकी दादी की अंगुलियाँ नहीं जलेंगी। पोते के इस आचरण के सामने बुढ़िया स्वयं को बच्ची समझने लगती है। इस छोटे से बच्चे में उसे अपना बेटा, अपना पति, अपना पिता– सब झलकने लगता है और वह रो पड़ती है।
''प्रेमचन्द के अधिकांश पात्र हास्यप्रेमी, जिन्दादिल, कठिन परिस्थितियों का धीरज से मुकाबला करनेवाले, अन्याय के सामने सिर न झुकानेवाले होते हैं।'' [2]
सवा सेर गेहूँ का नायक शंकर एक गरीब किसान है। जैसा कि आम किसानों की प्रकृति होती है, वह भी सरल हृदय और धर्मपरायण व्यक्ति है। साधु–सन्तों पर उसकी अगाध आस्था है। भारतीय संस्कृति के 'अतिथि देवो भवः' का पालन करनेवाला है। यही कारण है कि दरवाजे पर जब एक साधु पहुंच जाता है तो जौ के आटे की रोटी खिलाना उसे मंजूर नहीं है इसलिए वह गाँव के विप्र से गेहूँ उधार लेता है। वह भी मात्र सवा सेर। मगर यही सवा सेर गेहूँ उसकी जान का ग्राहक बन जाता है। गेहूँ सूद दर सूद बढ़ कर इतना हो जाता है कि केवल सूद को सधाने के लिए उसे पूरे बीस वर्ष तक विप्र की गुलामी करनी पड़ती है और सूद है कि सुरसा की तरह बढ़ता ही जा रहा है। यहाँ तक कि इसी चक्कर में शंकर भूख और गरीबी से मर भी जाता है। मगर फिर भी सूद से त्राण नहीं मिलता और अंततः गुलामी की उस चक्की में उसके बेटे का पिसना पड़ता है।
महाजनी सभ्यता कितना अमानवीय और क्रूर है इसका ज्वलंत उदाहरण सवासेर गेहूँ का विप्र है। शंकर खलिहानी के रूप में सवासेर के बदले कई सेर अनाज चुकता कर देता है फिर भी विप्र की बही में वह सवासेर गेहूँ जस–का–तस लिखा रहता है और उसका सूद चक्रवृद्धि ब्याज की दर से बढ़ता चला जाता है। यह बेईमानी की पराकाष्ठा भी है। ''अपनी कई कहानियों में उन्होंने सूद लेने की अनोखी तरकीबों का चित्रण किया है। 'मुक्तिधन' भी उनकी ऐसी ही कहानी है। वह सामाजिक अन्याय के सभी रूपों को चित्रित करते हैं।

महाजनों का अन्याय ऐसा था, जिसे समाज में बहुत से लोग न्याय समझते थे।'' [3]

सवासेर गेहूँ का शंकर भी इसी स्वभाव का था। वह विप्र के इस अन्याय को भी मरते दम तक कभी अन्याय नहीं मान पाया। उल्टे विप्र की नीयत पर शक करना वह पाप समझता था।

'नमक का दारोगा' का नायक वंशीधर एक कर्त्तव्य निष्ठ और ईमानदार युवक है। उसे जब नमक के महकमे में दारोगा की नौकरी लगती है तो पिता को उससे बड़ी–बड़ी उम्मीदें हैं। उन्हें पता है कि इस विभाग में तनख्वाह से कई गुना ऊपरी कमाई है। इसलिए बेटे को समझाते हैं कि बेवकूफी मत करना। जहाँ मौका मिले वहाँ चूकना मत। मगर वंशीधर पिता की इन वाहियात नसीहतों पर कान नहीं देता। यही वजह है कि जब अलोपीदीन की गाड़ी पकड़ता है तो उसे मुंहमांगी रकम की पेशकश की जाती है, मगर वह टस से मस नहीं होता। हार कर आलोपीदीन गिरफ्तारी दे देते हैं। मगर पैसों की बदौलत बेदाग छूट जाते हैं। उल्टे शहर के धनाढ्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति को नाहक परेशान करने के आरोप में वंशीधर को नौकरी से हाथ धोना पड़ता है।

लगता है कि यहाँ आकर कहानी खत्म हो गयी है, मगर नहीं, कहानी तो असल अब शुरू होती है। वंशीधर को अपने किये पर कोई पछतावा नहीं है। जबकि घर के लोग, खासकर उसके पिता उसे मूर्ख समझते हैं। तभी एक दिन अलोपीदीन उसके घर पहुँचते हैं। दरअसल उसकी ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता पर अलोपीदीन मुग्ध हैं। उनके लम्बे–चौड़े कारोबार को सम्भालने के लिए उन्हें ऐसे ही कर्मठ नौजवान की जरूरत थी। वह सम्मानपूर्वक वंशीधर को अपना मैनेजर नियुक्त करते हैं। अब जाकर कहानी कायदे से सम्पन्न होती है। और प्रेमचन्द यह स्थापित करने में सफल हो जाते हैं कि ईमानदार लोगों के लिए अभी भी समाज में जगह की कमी नहीं है। आलोदीन का जिस तरह से हृदय परिवर्तन होता है, ठीक वैसा ही हृदय–परिवत्तन प्रेमचन्द ने अपनी कहानी पंच परमेश्वर के पात्र जुम्मनशेख में दिखलाया है। अलगू चौधरी और जुम्मन शेख में पुरानी दोस्ती है। फिर भी जब अलगू चौधरी पंचायत में जुम्मन की बूढ़ी खाला के पक्ष में और स्वभावतः जुम्मन के विपक्ष में फैसला सुनाते हैं तो वर्षों की दोस्ती का महल ताश के पत्ते की तरह ढह जाता है। इतना ही नहीं क्षोभ और गुस्से के कारण जुम्मन अपने मित्र का दुश्मन भी बन जाता है। रात–दिन वह बदला चुकाने के मौके की फिराक में रहता है, और संयोग से जब मौका मिलता है तो चाहकर भी वह अन्याय के पक्ष में फैसला नहीं सुना पाता। उसका फैसला अलगू चौधरी के पक्ष में जाता है। उधर समझू साहू की सारी चालबाजी धरी की धरी रह जाती है। उसने तो सोचा था कि बैल की कीमत एक महीने बाद चुकानी है तब तक अधिक से अधिक बैल का इस्तेमाल कर ले। उसके अन्याय के कारण बैल जब महीना पूरा होने से पूर्व ही दम तोड़ देता है तो वह इस बात का बखेड़ा खड़ा करता है कि अलगू चौधरी ने रोगी बैल थमा दिया था। इसलिए वह कीमत अदा नहीं करेगा।

इसीलिए उसने जुम्मन को अपना पंच मनोनीत किया था कि वह अलगू से बदला सधाने के लिए उसके पक्ष में फैसला सुनायेगा। मगर हुआ ठीक इसके विपरीत। यही इस कहानी का उद्देश्य भी था। इसमें समझू साहु के चरित्र–चित्रण के जरिये प्रेमचन्द ने साबित कर दिया है कि बनियों के लिए ईमान–धर्म सबकुछ पैसा है। कम लागत अधिक मुनाफा उसकी प्रवृत्ति है।

'बड़े घर की बेटी' में यह दिखलाया गया है कि उसकी नायिका आनंदी उच्च कुल की एक स्वाभीमानी महिला है जो पुरुषों की धौंस बर्दाश्त नहीं करती। वह अपनी मर्यादा और अस्मिता की रक्षा के लिए सब कुछ कर सकती है। मगर वह यह भी बर्दाश्त नहीं कर सकती कि उसके कारण परिवार की जड़ें कमजोर हो जाय और परिवार टूट जाय। इसलिए जब उसका देवर घर छोड़ कर जाने लगता है तो अपना सारा अपमान भूलकर उसे मना लेती है और घर टूटने से बचा लेती है।

''प्रेमचन्द के चरित्र–चित्रण की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि थोड़ी देर के सम्पर्क से ही उनके पात्र बहुत दिनों तक परिचित जैसे लगने लगते हैं और कहानी खत्म कर देने पर भी पाठकों को बहुत दिनों तक याद रहते हैं।'' [4]

'कफन' कहानी के घीसू और माधव ऐसे ही अद्भुत और यादगार पात्र हैं। जिस समाज में मेहनत का कोई मोल नहीं रह गया हो और निठल्ले–बेईमानों के पास अकूत सम्पत्ति हो, कहाँ मेहनत के प्रति गरीबों में अनास्था का उपजना अस्वाभावित नहीं है। ऐसे ही पात्र हैं दोनों बाप–बेटे घीसू और माधव। उनका दुनिया की तमाम चीजों से भरोसा उठ गया है। यहाँ तक उन्हें एक–दूसरे पर भी अविश्वास है। इसीलिए उनमें से कोई भी उठकर पीड़ा से कराहती आसन्न प्रसवा बहू को देखने झोपड़ी में नहीं जाना चाहता। उन्हें आशंका है कि एक यदि यहाँ से उठा तो दूसरा ज्यादा आलू चुराकर खा लेगा। गरीबों के पतन की यह पराकाष्ठा है। अन्ततः जब बहू पीड़ा से मर जाती है तो उसके कफन के नाम पर मिले चंदे से दोनों खूब गुलछर्रे उड़ाते हैं और इस बात को उचित ठहराने के लिए अपने मन को सांत्वना देते हैं कि बहू थी बहुत धर्मप्रायण, क्योंकि मरते–मरते भी वह इतना सुख दे गयी।

थोड़े से अन्तर के साथ कुछ इसी किस्म का गरीब पात्र है पूस की रात का हल्कू। पूस की हड़कंप मचाने वाले जोड़े में वह अपने ही समान गरीब कुत्ते के साथ खेत अगोड़ रहा है। जब ठंड बर्दाश्त नहीं होती तो पत्ते बटोरकर खुद भी तापता है और कुत्ते को भी तपाता है। फिर भी ठंड नहीं जाती तो कुत्ते को कलेजे से सटाकर ठंड भगाने का असफल प्रयास करता है। कुत्ते के भौंकने पर और आहट से भी उसे आभास होता है कि शायद नीलगायें खेत की फसलें चर रही हैं मगर मारे ठंड के उससे उठा नहीं जाता और सुबह जब खेत की दुर्दशा का पता चलता है तो दुखी होने की बजाय आह्लादित होता है कि चलो इस ठंड में खेत अगोड़ने से पिण्ड छूटा। .

जैसे गोदान का होरी जीवनपर्यंत एक अदद गाय की साध पूरी नहीं कर सका। वैसे ही हल्कू की एक कम्बल खरीदने की साध कर्ज की बलि चढ़ जाती है। इस देश में गरीबों के एक तो सपने ही बहुत छोटे होते हैं और विडम्बना यह कि वे उसे भी पूरा नहीं कर पाते।

उधर 'शतरंज के खिलाड़ी' भी निकम्मे हो गये हैं। मगर उसी निकम्मेपन का प्रभाव कफन के घीसू और माधव पर पड़ता है। वे देखते हैं कि समाज में एक वर्ग बिना देह हिलाये मालपुए उड़ाता है और गरीब हाड़ तोड़ने के बावजूद दो जून की रोटी नहीं जुटा पाता तो श्रम के प्रति वह उदासीन होने लगता है। उसे लगता है कि शरीर ठठाने का क्या लाभ है? इसलिए वह भी जांगर की चोरी करने पर उतारू हो जाता है। शतरंज के खिलाड़ी के मीर साहब और मिर्जा साहब गाँव की जनता का खून चूस कर अंग्रेज बहादुर को डाली पहुँचवाते हैं और विलासिता का जीवन जीते हैं। भोग–विलास से बचे हुए समय को गुजारने का एकमात्र जरिया है उनके पास शतरंज। इस खेल ने उनका सारा कर्तव्यबोध, विवेक और यहाँ तक कि संवेदना तक को निर्जीव बना दिया है। घर पर शतरंज खेलने में जब व्यवधान उपस्थित होता है तो दोनों खिलाड़ी पहुंच जाते हैं मस्जिद में। वहाँ खेल ऐसा जमता है और वे उसमें इतना डूब जाते हैं कि बादशाह को अंग्रेजी सेना बंदी बनाकर इनकी नजरों के सामने से गुजर जाती है, मगर ये अपनी बाजी बंद नहीं करते और अंततः खेल–खेल में ही स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि दोनों एक–दूसरे पर तलवारें तान लेते हैं और एक दूसरे की जान ले लेते हैं। यह शासक वर्ग के पतन की कहानी है। यह कुछ–कुछ ऐसा ही है कि 'जब रोम जल रहा था तो नीरो वंशी बजा रहा था।'

निष्कर्ष

इस प्रकार कहानियों में भी प्रेमचंद के पात्रों के कई–कई आयाम

पाठकों के सामने आते हैं। इनके पात्रों में हर वर्ग, हर पेशे से जुड़े हुए लोग हैं, पढ़े–लिखे भी और निरक्षर भी, दयालू भी और दुष्ट भी, पाखंडी भी और सत्यवादी भी। वह बच्चों, बूढ़ों, विधवाओं, पढ़ी–लिखी स्त्रियों और अपढ़ किसान स्त्रियों का समान सफलता से चित्रण कर सके हैं। पात्रों की विविधता ही प्रेमचंद को विशिष्ट कहानीकार बनाता है। जिस प्रकार वे समाज के अनेक वर्गों और जातियों से पात्र को ग्रहण करते हैं, वह समाज की संपूर्णता को रेखांकित करने के लिए अनिवार्य प्रतीत होता है। प्रेमचंद की कहानियों के पात्रों में तमाम मानवीय गुण सन्निहित हैं। वे पात्र को देवता और दानव बनाने से बचते हुए मनुष्य के तमाम गुण और दोषों का ध्यान रखते हुए उन्हें रचते हैं।

संदर्भ–संकेत

1. 'प्रेमचन्द और उनका युग', राम विलास शर्मा, पृ.–123
2. 'प्रेमचन्द और उनका युग', राम विलास शर्मा, पृ.–121
3. वही, पृ.– 121
4. वही, पृ.– 117